नवभारत
इंदौर, रविवार, 13 जुलाई 2025

मनोविज्ञान, मनोरोग और ज्योतिषीय का एकीकृत दृष्टिकोण

एकात्म चिकित्सा की ओर—मन, शरीर और आत्मा की संतुलन यात्रा, और मेरा अनुभव ज्योतिषीय मार्गदर्शन के साथ

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अवसाद आज एक वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है, जो केवल भावनात्मक ही नहीं बल्कि सामाजिक, शारीरिक और आध्यात्मिक असंतुलन का द्योतक भी है. यह स्थिति किसी को भी प्रभावित कर सकती है—चाहे वह छात्र हो, गृहिणी, सेवानिवृत्त अधिकारी, युवा कार्यकर्ता, या वरिष्ठ प्रशासक. यह वह दशा है जब जीवन की गतिविधियाँ निरर्थक प्रतीत होती हैं, आत्मविश्वास चुक जाता है, और मन थककर एक गहरे अंधकार में खो जाता है. परंतु जैसे-जैसे हम इस संकट के बहुआयामी स्वरूप को समझते हैं, वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता है कि इसका समाधान केवल एक पद्धति या चिकित्सा तक सीमित नहीं हो सकता. मेरे अपने अनुभव और शोध के दौरान यह अनुभव हुआ है कि जब तक हम मन, शरीर और आत्मा को एक साथ संबोधित नहीं करते, तब तक अवसाद से उबरने की प्रक्रिया अधूरी रहती है.

मनोविज्ञान के क्षेत्र में संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा, माइंडफुलनेस, ध्यान, और सामाजिक समर्थन जैसी पद्धतियाँ प्रभावी सिद्ध हुई हैं. वहीं, मनोरोग विशेषज्ञ जैव-रासायनिक असंतुलन को नियंत्रित करने के लिए दवाएं, थेरेपी और जीवनशैली संशोधन की सलाह देते हैं. लेकिन मेरे अपने अनुभव में, विशेष रूप से जब मैंने विभिन्न वर्गों से जुड़े लोगों को ज्योतिषीय परामर्श दिया—तो यह स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि व्यक्ति को आध्यात्मिक आश्रय, आत्मिक संतुलन और लौकिक कारणों की गहराई तक समझ भी चाहिए होती है, जो केवल ज्योतिष ही प्रदान करता है.

जब मैंने ज्योतिष के माध्यम से अवसादग्रस्त व्यक्तियों के जीवन को देखा और उनकी कुंडलियों का विश्लेषण किया, तो यह पाया कि अधिकतर मामलों में चंद्रमा कमजोर था, या राहु-केतु, शनि, मंगल जैसे पापग्रहों की दृष्टि में था. कुछ मामलों में व्यक्ति की महादशा- अंतरदशा मानसिक द्वंद्व को उभारने वाली चल रही थी. लेकिन इन स्थितियों में जब उन्हें उपयुक्त उपाय बताए गए—जैसे सोमवार को उपवास, चंद्र अर्घ्य, चंद्रमा शांति मंत्र जाप, राहु-केतु शांति के लिए गोमेद या लहसुनिया धारण करना, हनुमान चालीसा या शिव पंचाक्षरी मंत्र का जप, अथवा नवग्रह शांति यज्ञ—तो उनमें मानसिक स्थिति में चमत्कारिक सुधार देखने को मिला.

मेरे पास अनेक बार ऐसे जिज्ञासु आए—सरकारी अधिकारी, व्यापारी, शिक्षाविद, महिला गृहिणियाँ, और युवा छात्र—जिन्होंने बार-बार एक ही बात कही कि उन्हें विज्ञान से समाधान नहीं मिल रहा, क्योंकि उनका संकट आत्मिक है, और ज्योतिष के माध्यम से उन्हें यह समझ में आया कि उनका दुख केवल वर्तमान नहीं, बल्कि भाग्य, कर्म और ग्रहों के संतुलन से भी जुड़ा हुआ है. जब वे अपनी कुंडली में ग्रहयोग और दशाओं को समझते हैं, तो उन्हें अपने जीवन के संकटकाल का अर्थ समझ आता है—और तभी उनका मन एक नई स्वीकार्यता, शांति और आस्था से भर जाता है.

अनेक व्यक्तियों ने कहा कि जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह साढ़ेसाती या केतु की दशा का प्रभाव है, और यह अवधि इतनी वर्ष की होगी, तो उनका भय समाप्त हो गया. यह जानकारी उनके भीतर धैर्य, संतुलन और आत्मविश्वास को जागृत कर गई. कुछ महिला जिज्ञासुओं ने मुझसे यह कहा कि उन्हें जब गर्भधारण में बाधा हो रही थी और मानसिक चिंता अत्यधिक थी, तब ज्योतिषीय उपाय जैसे चंद्रमा की पूजा, गाय को चारा देना, और अशोक वृक्ष की सेवा ने उन्हें मानसिक शांति दी और अंततः फल भी मिला. कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि वे बार-बार परीक्षा में असफल हो रहे थे, आत्मग्लानि और अवसाद में डूब चुके थे, लेकिन जब उन्हें राहु-केतु के दोष का ज्ञान हुआ और उपाय के रूप में मंत्र जाप और गोमेद धारण करने की सलाह दी गई, तो उनमें चेतना का संचार हुआ. यह अनुभव बताता है कि ज्योतिष केवल भविष्य बताने की विद्या नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की आंतरिक और बाह्य शक्तियों को संतुलित करने का आध्यात्मिक उपकरण है. जब व्यक्ति को यह ज्ञात होता है कि उसका मन चंद्रमा के कारण अशांत है, और उसका आत्मबल शनि की परीक्षा में है, तो वह दुख को भाग्य की सजा नहीं, बल्कि आत्म-विकास की प्रक्रिया के रूप में देखने लगता है.

ज्योतिषीय परामर्श में मैंने यह भी पाया कि जिन व्यक्तियों ने ध्यान, मंत्र-जाप, यज्ञ, व्रत, रत्न आदि उपायों को आस्था और नियमितता के साथ अपनाया, उनमें धीरे-धीरे मानसिक स्थिरता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हुआ. कई मामलों में जहाँ व्यक्ति दवाओं और चिकित्सा से पूर्णतः निराश हो चुका था, वहाँ भी ज्योतिष ने आशा की एक नई किरण प्रदान की. अतः मेरा यह अनुभव रहा है कि जब मनोविज्ञान, मनोरोग और ज्योतिष को समन्वित रूप में अपनाया जाता है, तो न केवल व्यक्ति अवसाद से बाहर निकलता है, बल्कि वह अपने जीवन के प्रति एक नई दृष्टि और ऊर्जा से भर जाता है. श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कहा गया यह श्लोक यहाँ पूर्णतः उपयुक्त है—

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठित्.

(अर्थात् - अपने स्वधर्म का पालन दोषयुक्त होते हुए भी श्रेष्ठ है, परधर्म का पालन चाहे वह कितना भी सुचारु क्यों न हो, आत्मा को संतोष नहीं देता.)

ज्योतिष हमें अपने स्वधर्म की पहचान कराता है—हमारे जीवन का मार्ग, हमारे स्वभाव, हमारे कर्म, और हमारे समय का सार. जब व्यक्ति इस मार्गदर्शन को अपनाता है, तो वह केवल अवसाद से मुक्त नहीं होता, बल्कि एक जाग्रत, आत्मबल से युक्त, और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध जीवन की

> यह मेरा आत्मीय और व्यावहारिक अनुभव रहा है, और इसीलिए मैं यह स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि अवसाद के उपचार में ज्योतिषीय दृष्टिकोण एक अत्यंत आवश्यक और प्रभावकारी स्तंभ है, जिसे आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वय में अपनाया जाना चाहिए. यही समग्र और संतुलित पद्धति व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश, असंतुलन से स्थिरता और संदेह से आत्मबोध की दिशा में ले जाती है.

राशिफल

दिनांक- 13 से 19 जुलाई 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मिथुन राशि में ता. 16 को 4/48 रातअंत से कर्क राशि में, मंगल सिंह राशि में, बुध कर्क राशि में ता. 15 को 3/39 रात से वक्री, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र वृषभ राशि में, शनि मीन राशि में ता. 11 को 7/24 रात से वक्री, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मकर कुम्भ मीन और मेष राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 13 को रोहिणी नक्षत्र का शुक्र और वक्री शनि के प्रभाव से बाजारों में जोरदार उठा पटक करेगा, सावधानी से व्यापार करें. मौसम खराब रहने से भी व्यापार प्रभावित होगा, हमोर विचार से केसर, कुमकुम, सोना, चांदी एवं अनाज के भावों में तेजी होगी यदि इन दिनों तेल, तिलहन के भाव मंदे हों तो माल का स्टॉक करें आगे लाभ होगा. मूंग, मोठ, गेंहू, चावल, राई, मसूर, तिल, सरसों के भाव में तेजी होगी, रूई में पहले तेजी बाद में मंदी होगी.

पर्व/व्रत/त्यौहार :

सोमवार	14 जुलाई को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत, महाकाल सवारी उज्जैन
मंगलवार	15 जुलाई को	मंगला गौरी व्रत
गुरूवार	17 जुलाई को	शीतला सप्तमी

मेष

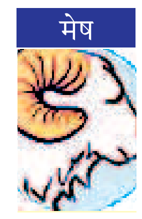

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. कारोबारी यात्रा हो सकती है.

वृषभ

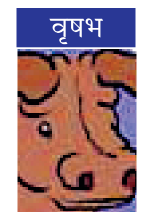

आपकी महत्वाकांक्षा चरमसीमा पर रहेगी, अनहोनी का भय रहेगा. आप भविष्य की योजना बनायेंगे. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी रखें. रोगी के कार्यो में खर्च होगा. कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी. पारिवारिक जीवन में वक्त देकर खुशी मिलेगी, दूसरों की सलाह पर ध्यान दें.

मिथुन

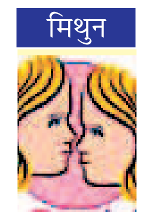

आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे. आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा. दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी. नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि, भवन, प्रापर्टी में खर्च होगा. नये कार्यो पर विचार होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

कर्क

आपकी जान पहचान और परिचय का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं. आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर दराज की यात्रा का विचार करेंगे, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगीं आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

सिंह

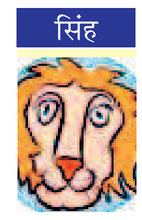

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

कन्या

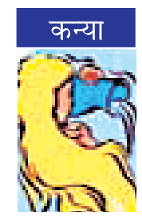

इस सप्ताह पुराना अटका धन मिलने के आसार हैं, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे. कई उतार चढ़ाव आयेंगे. व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति मिलेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च अधिक होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

तुला

आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते है. जकन्या जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा. अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

वृश्चिक

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

धनु

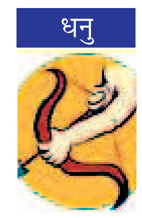

स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, साझेदारी में संदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है. सावधानी बांछनीय है, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

मकर

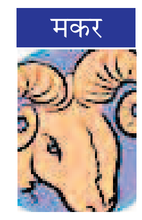

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यो में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

कुम्भ

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, कड़ी मेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे, परिवार में अविश्वासी लोगों की सलाह से बचें, पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा.

मीन

प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत और मेहनत आपको भरपूर लाभ देगी, आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जमीन जायजाद का बटवारा हो सकता है, वाद विवाद से दूर रहें. अटके कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छे परिणाम मिलेंगे. भावनात्मक संबंधों की मजबूती आपको आंतरिक खुशी देगी.

प्रेम और प्रकृति का अनोखा संगम सावन का हरा रंग

शुक्रवार से शुरू हुए सावन मास में एक बार फिर प्रकृति हरे रंग की चादर ओढ़कर इठला रही है, और वातावरण में भक्ति, प्रेम तथा सौंदर्य का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है. यह वह समय है जब मंदिरों में बम-बम भोले की गूंज सुनाई देती है, और महिलाएं हरे रंग की चूड़ियों, साड़ियों, बिंदी व मेहंदी से सजकर शिव-पार्वती की आराधना में लीन हो जाती हैं. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि सावन में हरे रंग को इतना महत्व क्यों दिया जाता है?

शिव और हरे रंग की पौराणिक कथा- धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, सावन मास भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है. इसी मास में समुद्र मंथन के दौरान निकले कालकूट विष को शिव ने अपने कंठ में धारण कर लिया था, जिससे वे नीलकंठ कहलाए. विष पीने के कारण जब शिव तप में लीन हुए, तो समस्त प्रकृति ने हरियाली ओढ़कर उनकी तपस्या में सहयोग किया. तभी से सावन में जल अर्पण

की परंपरा शुरू हुई और हरियाली को शिव भक्ति का प्रतीक माना जाने लगा.

हरा रंग- जीवन, समृद्धि और प्रेम का प्रतीक- हरे रंग को जीवन, समृद्धि और शांतिप्रियता का प्रतीक माना जाता है. यह न केवल प्रकृति की ताजगी को दर्शाता है, बल्कि शिव-पार्वती के प्रेम और सौंदर्य की अनूठी छवि भी प्रस्तुत करता है. देवी पार्वती स्वयं प्रकृति का रूप मानी जाती हैं, और जब वे हरे वस्त्रों में शिव की पूजा करती हैं, तो यह भक्ति के साथ-साथ प्रेम की पराकाष्ठा को भी दर्शाता है. शास्त्रों में यह भी उल्लेख है कि हरा रंग बुध ग्रह से जुड़ा है, जो बुद्धि, संवाद और सौम्यता का प्रतीक है. हरे वस्त्र पहनने से बुध देव प्रसन्न होते हैं और जीवन में संतुलन व सफलता प्रदान करते हैं.

महिलाओं के श्रृंगार में हरे रंग का विशेष स्थान

सावन में सुहागिन महिलाएं हरे रंग की चूड़ियों, साड़ियों, बिंदी और मेहंदी का विशेष रूप से उपयोग करती हैं. ये केवल श्रृंगार की वस्तुएं नहीं, बल्कि इनका गहरा आध्यात्मिक अर्थ भी है. हरे रंग की चूड़ियां सौभाग्य और अखंड सुहाग का प्रतीक होती हैं, वहीं मेहंदी का गहरा रंग प्रेम और भक्ति की गहराई को दर्शाता है.

घर में धातु, लकड़ी, स्फटिक या कांच का कछुआ रखना होता है शुभ

वास्तु शास्त्र में कई ऐसे उपाय बताए गए हैं जिनको करने से आपके जीवन की दिशा और दशा बदल सकती है. कई ऐसी वस्तुएं भी हैं जिन्हें वास्तु में घर में रखने की बात कही जाती है. इन्हीं में से एक है धातु का कछुआ. हालांकि, इसे घर में रखने के भी कुछ नियम होते हैं.

धार्मिक और वास्तु के नियमों के अनुसार, घर में जीवित कछुआ रखना शुभ हीं होता. धार्मिक मत के अनुसार हर प्राणी स्वतंत्र है और किसी को भी बंधनों में बांधकर आप जीवन में सुख नहीं पा सकते. इसके साथ ही वास्तु के मतानुसार घर में जिंदा कछुआ रखने से नकारात्मकता आ सकती है.

धातु का कछुआ घर में रखें या नहीं?- वास्तु के नियमों के अनुसार घर में आप धातु का कछुआ रख सकते हैं. इसे रखने से सकारात्मक ऊर्जा आपके जीवन में आती है. धातु के कछुए को आप उत्तर दिशा में रख सकते हैं. इस दिशा में रखा गया धातु का कछुआ घर में सुख-समृद्धि लाता है.

लकड़ी का कछुआ रखने के नियम- आप लकड़ी से बना कछुआ भी अपने घर में रख सकते हैं. हालांकि ये आपको फायदा तभी देगा जब आप इसे घर की पूर्व या दक्षिण-पूर्व दिशा में रखेंगे. वास्तु के अनुसार ऐसा करने से सौभाग्य और सफलता जीवन में प्राप्त होती है.

स्फटिक का कछुआ घर में रखें या नहीं?- स्फटिक जिसे क्वार्ट्ज भी कहा जाता है इससे बना कछुआ भी आप अपने घर में रख सकते हैं. इसे रखने के लिए सबसे सही दिशा दक्षिण पश्चिम मानी जाती है. स्फटिक का कछुआ आपको उन्नति और प्रसिद्धि दिलाने वाला माना जाता है.

सफेद सांप और सपने में नाग के दर्शन माने जाते हैं भगवान शिव की विशेष कृपा के प्रतीक

सावन माह आरंभ हो गया है. हिंदू धर्म में सावन माह का विशेष महत्व होता है, यह मौसम चारों ओर हरियाली ला देता है. बारिश के वजह से जहां गर्मी से राहत को मिलती ही है, वहीं भगवान शिव की उपासना से आध्यात्मिक और मानसिक शांति भी मिलती है. बता दें कि सावन को विशेष तौर पर भगवान शिव से जोड़ा जाता है, साथ ही सावन को सांप के साथ ही जोड़ कर देखा जाता है. बता दें नाग को शिव के गले का हार कहा गया है.

सांप दिखना शुभ या अशुभ- वैसे तो हिंदू धर्म में पौराणिक काल से ही नागों की पूजा की जाती है. हिंदू शास्त्र और ग्रंथ में भी सांप को पवित्र जीव माना गया है. वहीं, ज्योतिष शास्त्र में सावन माह के दौरान सांप का दिखना शुभ माना गया है. नाग महादेव को बेहद प्रिय है, यही वजह से उन्होंने नाग को अपने गले में धारण किया है. ऐसे में ज्योतिष कहता है कि अगर सावन में सांप दिख जाए तो यह शुभ है. इसका मतलब साफ है कि भगवान शिव आपकी पूजा से बेहद प्रसन्न हैं और जल्द आपकी मनोकामना पूर्ण होने वाली है.

सफेद सांप दिखना- वैसे तो सफेद सांप बेहद दुर्लभ होते हैं, मगर आपको यह कहीं दिख जाए तो मान लीजिए भगवान शिव आप से प्रसन्न हैं और आप उनके परम भक्तों में से एक हैं. ज्योतिष के मुताबिक, यह इस बात का संकेत है कि भोलेनाथ आपके साथ हैं और अब आपके हर बिगड़े काम बनेंगे.

सपने में सांप देखना- अगर आप सपने में भी सांप या नाग देख रहे तो मान लीजिए कि शिव आपको दर्शन दे रहे हैं और जल्द ही वे आपके सभी दुख दूर कर देंगे.

विवाह में देरी के ज्योतिषीय कारण और समाधान : कुंडली दोषों का प्रभाव

> कुंडली का सप्तम भाव विवाह और जीवनसाथी का प्रतिनिधित्व करता है. यदि इस भाव में शुभ ग्रह न हों, या पाप ग्रहों (शनि, राहु, केतु) की युति या दृष्टि हो, तो विवाह में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं. कई बार सप्तम भाव का स्वामी अशुभ भावों में स्थित होता है या शत्रु ग्रहों से पीड़ित होता है, जिससे विवाह में विलंब होता है.

विवाह, जिसे दो व्यक्तियों और परिवारों का पवित्र बंधन माना जाता है, में आने वाली बाधाएं कई बार केवल सामाजिक मानसिक कारणों तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि इनके पीछे गहरे ज्योतिषीय कारण भी हो सकते हैं. ज्योतिष के अनुसार, व्यक्ति की जन्म कुंडली में विवाह की स्थिति और संभावनाएं स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं. कई बार कुंडली में मौजूद ग्रह दोष या कमजोर स्थितियां विवाह विलंब का कारण बनती हैं.

विवाह में देरी के प्रमुख ज्योतिषीय कारण- कमजोर विवाह योग या सप्तम भाव में ग्रह दोष- कुंडली का सप्तम भाव विवाहजीवनसाथी का प्रतिनिधित्व करता है. यदि इस भाव में शुभ ग्रह न हों, या पाप ग्रहों (शनि, राहु, केतु) की युति या दृष्टि हो, तो विवाह में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं. कई बार सप्तम भाव का स्वामी अशुभ भावों में स्थित होता है या शत्रु ग्रहों से पीड़ित होता है, जिससे विवाह में विलंब होता है.

मांगलिक दोष- मंगल दोष विवाह में देरी का एक सामान्य लेकिन प्रभावशाली कारण है. जब जन्म कुंडली में मंगल ग्रह 1, 4, 7, 8 या 12वें भाव में स्थित होता है, तो व्यक्ति मांगलिक कहलाता है. यह दोष यदि उचित मिलान के बिना विवाह हो, तो वैवाहिक जीवन में कलह या दुर्भाग्य ला सकता है, और यदि यह दोष अधिक तीव्र हो तो विवाह में लंबी देरी होती है.

दुर्बल या पीड़ित शुक्र ग्रह- शुक्र ग्रह, जिसे विवाह, प्रेम और भौतिक सुखों का कारक माना गया है, यदि कुंडली में कमजोर, अस्त या शत्रु ग्रहों से पीड़ित हो, तो जातक को विवाह में काफी विलंब हो सकता है. कमजोर शुक्र न केवल विवाह में देरी करता है, बल्कि वैवाहिक जीवन में भी असंतुलन और अस्थिरता ला सकता है.

शनि की दृष्टि और प्रभाव- शनि को न्यायप्रिय और कर्मफलदाता ग्रह माना जाता है, लेकिन इसकी

दृष्टि जीवन में देरी और ठहराव लाती है. यदि शनि सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा हो, या सप्तम भाव में उपस्थित हो, तो व्यक्ति को विवाह में धैर्य और लंबे इंतजार का सामना करना पड़ सकता है.

राहु और केतु का भ्रमित प्रभाव- राहु और केतु को छाया ग्रह कहा गया है, और इनका प्रभाव मानसिक व भावनात्मक स्थितियों पर बहुत अधिक पड़ता है. यदि सप्तम भाव में या सप्तम भाव के स्वामी के साथ राहु या केतु की युति हो, तो व्यक्ति सही जीवनसाथी के चुनाव को लेकर असमंजस में रहता है.

प्रतिकूल ग्रह दशाए- कई बार कुंडली में विवाह का समय आने के बावजूद, महादशा या अंतरदशा अशुभ ग्रह की चल रही होती है. इस दौरान विवाह की बातचीत में बार-बार बाधाएं आती हैं या रिश्ता बनते-बनते बिगड़ जाता है.

ज्योतिषीय उपाय- विवाह योग को मजबूत करने के लिए-

- **शुक्र और गुरु ग्रह को बलवान बनाएं-** शुक्रवार को माता लक्ष्मी और गुरुवार को बृहस्पति देव की पूजा करने से इन ग्रहों को मजबूती मिलती है.
- **मांगलिक दोष निवारण-** हनुमान चालीसा का पाठ करें और मंगलवार को हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाएं.
- **राहु-केतु के प्रभाव से मुक्ति-** शनिवार को शनिदेव की पूजा करें और राहु-केतु शांति मंत्र का जाप करें.
- **कुंडली मिलान और व्यक्तिगत परामर्श-** विवाह से पहले कुंडली मिलान अवश्य करवाएं और किसी योग्य ज्योतिषाचार्य से व्यक्तिगत परामर्श लें.
- **सप्तम भाव के दोष निवारण-** सप्तमेश (सप्तम भाव के स्वामी) की शांति हेतु विशेष पूजा करवाई जा सकती है.